Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)
© VIJACT |Vol.2, Issue5, May 2026, pp. 45-50 | ISSN: 3139-1656 (Online)
DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i5.46
Available online at: https://vijact.com/

राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों का समकालीन भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण

डॉ. वीरेंद्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह डिग्री कॉलेज हेवरा इटावा

Article Info

Article history:
Received May 20, 2026
Accepted May 30, 2026
Published May 31, 2026

Keywords:
समाजवाद
सामाजिक न्याय
जाति व्यवस्था
विकेंद्रीकरण
लोकतांत्रिक समाजवाद
लोहियावाद
पिछड़ा वर्ग

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय समाजवादी चिंतन परंपरा के अग्रणी विचारक डॉ. राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों का अध्ययन करते हुए उनकी समकालीन भारतीय राजनीति में प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। लोहिया का समाजवाद केवल आर्थिक समानता तक सीमित न रहकर सामाजिक न्याय, जाति-उन्मूलन, सत्ता के विकेंद्रीकरण और लोकतांत्रिक मूल्यों के समन्वय पर आधारित था। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह परखना है कि स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता-उपरांत भारत के संदर्भ में विकसित लोहिया का वैचारिक ढाँचा क्या आज के सामाजिक न्याय आधारित राजनीतिक विमर्श को समझने में सहायक है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पिछड़े वर्गों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व, जातिगत असमानता के प्रश्न और जनभागीदारी आधारित लोकतंत्र की माँग के रूप में लोहियावादी चिंतन की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। साथ ही पत्र यह भी रेखांकित करता है कि लोहिया के अनेक आदर्श व्यावहारिक राजनीति में अधूरे रहे हैं।

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.

Corresponding Author:
डॉ वीरेंद्र कुमार
Email: vkccspg@gmail.com

1. प्रस्तावना:

भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा में डॉ. राम मनोहर लोहिया का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। वे एक ऐसे विचारक थे जिन्होंने पश्चिमी समाजवादी विचारधाराओं की यांत्रिक नकल करने के बजाय भारतीय सामाजिक यथार्थ की पृष्ठभूमि में समाजवाद की पुनर्व्याख्या प्रस्तुत की (प्रसाद, 1974)। उन्होंने अनुभव किया कि भारत में आर्थिक असमानता और सामाजिक विषमता परस्पर गुँथी हुई हैं, और जब तक जाति आधारित संरचना को चुनौती नहीं दी जाएगी, तब तक मात्र वर्गीय विश्लेषण के आधार पर समाजवाद की स्थापना संभव नहीं है (लोहिया, 1985; दीक्षित, 2013)। लोहिया के समाजवादी चिंतन का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने समाजवाद को केवल औद्योगिक श्रमिक वर्ग के संघर्ष तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे भारतीय समाज के सर्वाधिक वंचित और शोषित वर्गों, विशेषकर पिछड़ी जातियों, स्त्रियों और निर्धन कृषकों के उत्थान से जोड़ा (ठाकुर, 1979; चतुर्वेदी, 2019)। उनका चिंतन गांधीवादी नैतिकता, समाजवादी अर्थदृष्टि और लोकतांत्रिक राजनीति का एक मौलिक संश्लेषण था (कुमारी एवं झा, 2019)। यही कारण है कि उन्हें भारतीय वामपंथ एवं समाजवादी आंदोलन की मुख्यधारा का एक स्वतंत्र एवं विशिष्ट स्वर माना जाता है (सिन्हा, 1965)।

समकालीन भारतीय राजनीति में जब हम सामाजिक न्याय, आरक्षण, पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व और क्षेत्रीय दलों के उभार की परिघटनाओं का अवलोकन करते हैं, तो उनमें लोहियावादी राजनीतिक तर्क की अनुगूँज स्पष्ट दिखाई देती है (कुमारी, 2025)। उत्तर भारत के राजनीतिक परिदृश्य में अनेक समाजवादी दलों की वैचारिक जड़ें लोहिया के चिंतन में खोजी जा सकती हैं (निगम एवं मीना, 2022)। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि उनके विचार किस सीमा तक वर्तमान राजनीतिक यथार्थ में मूर्त हुए हैं और किस सीमा तक वे आदर्श मात्र बनकर रह गए हैं। प्रस्तुत अध्ययन की केंद्रीय समस्या यह है कि लोहिया के समाजवादी विचार, जो एक विशिष्ट ऐतिहासिक काल में विकसित हुए, समकालीन भारतीय राजनीति की जटिल परिस्थितियों में कितने प्रासंगिक एवं व्यावहारिक हैं, तथा उनके सैद्धांतिक आदर्शों और राजनीतिक व्यवहार के बीच कितना अंतराल विद्यमान है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों की वैचारिक आधारभूमि का व्यवस्थित अध्ययन करना।
2. समानता, सामाजिक न्याय, जाति-उन्मूलन और विकेंद्रीकरण संबंधी उनकी अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
3. समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय की राजनीति, पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व एवं जनभागीदारी के संदर्भ में लोहियावादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
4. लोहिया के विचारों की उपलब्धियों एवं सीमाओं का आलोचनात्मक परीक्षण करना तथा भविष्य के अध्ययन की दिशाएँ सुझाना।

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन प्रकृति में गुणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक है। यह किसी क्षेत्रीय सर्वेक्षण अथवा सांख्यिकीय आँकड़ों पर आधारित न होकर द्वितीयक स्रोतों के विवेचनात्मक अध्ययन पर केंद्रित है। अध्ययन में लोहिया की मूल कृतियों, यथा *इतिहास चक्र* (लोहिया, 1976) एवं *जाति प्रथा* (लोहिया, 1985) के साथ-साथ उनके चिंतन पर लिखित विद्वत्तापूर्ण व्याख्या-ग्रंथों (दीक्षित, 2013; ठाकुर, 1979; केल्कर, 1963) तथा समकालीन शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों (चतुर्वेदी, 2019; रहमान, 2020; निगम एवं मीना, 2022; कुमारी, 2025) को आधार बनाया गया है। विश्लेषण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम लोहिया के विचारों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में रखकर समझा गया, तत्पश्चात उन विचारों को समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों के साथ तुलनात्मक दृष्टि से परखा गया। यह तुलनात्मक राजनीतिक सिद्धांत की पद्धति का अनुसरण करता है, जिसमें विचारों को उनके वैचारिक प्रतिमानों एवं व्यावहारिक परिणामों दोनों के आलोक में देखा जाता है (गौतम, 2013)। इस प्रकार अध्ययन केवल वर्णनात्मक न रहकर आलोचनात्मक एवं संश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाता है।

4. राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों की वैचारिक आधारभूमि

4.1 समाजवाद की अवधारणा

लोहिया के लिए समाजवाद कोई आयातित सिद्धांत मात्र नहीं था, अपितु एक ऐसी जीवन-दृष्टि थी जो भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढाली गई थी। उन्होंने यूरोपीय समाजवाद की औद्योगिक-केंद्रित अवधारणा से असहमति प्रकट करते हुए यह तर्क दिया कि भारत जैसे कृषि-प्रधान एवं जाति-विभाजित समाज में समाजवाद को सामाजिक संरचना के मूलभूत रूपांतरण से जोड़ना अनिवार्य है (प्रसाद, 1974; शर्मा, 1979)। उनका समाजवाद पूँजीवाद और रूढ़िवादी साम्यवाद, दोनों के विकल्प के रूप में प्रस्तुत हुआ, जिसे एशियाई परिस्थितियों के अनुकूल "तीसरे मार्ग" के रूप में देखा गया (भसीन, 1972)। लोहिया मानते थे कि भारतीय समाजवाद को इतिहास की गति को समझकर आगे बढ़ना होगा। उनके इतिहास-दर्शन में सभ्यताओं के उत्थान और पतन का चक्रीय स्वरूप दिखाई देता है, जहाँ वे केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण की प्रवृत्तियों को इतिहास की निर्णायक शक्तियों के रूप में रेखांकित करते हैं (लोहिया, 1976, पृ. 48)। यह दार्शनिक आधार उनके समूचे समाजवादी चिंतन को एक मौलिक भारतीय पहचान प्रदान करता है।

4.2 समानता एवं सामाजिक न्याय का विचार

लोहिया के चिंतन के केंद्र में समानता का सिद्धांत है। उनके अनुसार समानता केवल आर्थिक नहीं, अपितु सामाजिक, राजनीतिक एवं लैंगिक स्तरों पर भी अनिवार्य है (चतुर्वेदी, 2019)। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त असमानता के विभिन्न आयामों, वर्ग, जाति, लिंग, भाषा एवं रंग की पहचान की और इन सभी के विरुद्ध संघर्ष को समाजवादी आंदोलन का अभिन्न अंग माना (रहमान, 2020)। लोहिया का सामाजिक न्याय का विचार गांधी एवं जयप्रकाश नारायण के समानांतर विकसित हुआ, किंतु उसकी अपनी विशिष्टता थी। जहाँ गांधी हृदय-परिवर्तन एवं नैतिक उत्थान पर बल देते थे, वहीं लोहिया वंचित वर्गों के लिए सकारात्मक राजनीतिक हस्तक्षेप एवं विशेष अवसर की वकालत करते थे (कुमारी एवं झा, 2019)। उनका प्रसिद्ध सूत्र "जिंदगी और हुकूमत में बराबरी" इसी सामाजिक न्याय की भावना का उद्घोष था, जिसमें सत्ता और संसाधनों में वंचितों की समुचित भागीदारी की माँग निहित थी।

4.3 जाति व्यवस्था पर लोहिया का दृष्टिकोण

लोहिया के समाजवादी चिंतन की सबसे मौलिक देन उनका जाति-विश्लेषण है। उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि भारत में जाति और वर्ग दोनों ही असमानता के स्रोत हैं, किंतु जाति का प्रभाव अधिक गहरा एवं स्थायी है (लोहिया, 1985, पृ. 79)। उनका मानना था कि जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज की उत्पादक ऊर्जा को अवरुद्ध किया है और सामाजिक गतिशीलता को रोककर राष्ट्र को आंतरिक रूप से दुर्बल बनाया है। लोहिया ने जाति-उन्मूलन को समाजवाद की पूर्व-शर्त माना। उन्होंने तर्क दिया कि जब तक पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों, स्त्रियों और अल्पसंख्यकों को नेतृत्व एवं सत्ता में विशेष अवसर नहीं दिए जाते, तब तक वास्तविक समानता असंभव है (दीक्षित, 2013, पृ. 49; निगम एवं मीना, 2022)। यह दृष्टिकोण भारतीय राजनीति में आगे चलकर पिछड़े वर्गों के राजनीतिक सशक्तीकरण के सैद्धांतिक आधार के रूप में विकसित हुआ। इस अर्थ में लोहिया का जाति-चिंतन उनके समाजवाद को अद्वितीय भारतीय स्वरूप प्रदान करता है।

4.4 आर्थिक एवं राजनीतिक विकेंद्रीकरण

लोहिया केंद्रीकृत सत्ता एवं विशाल औद्योगिक संरचना के आलोचक थे। उन्होंने तकनीक के ऐसे स्वरूप की वकालत की जो छोटी इकाइयों के अनुकूल हो और जिससे रोजगार का व्यापक सृजन संभव हो (शर्मा, 1979)। उनकी आर्थिक दृष्टि में विकेंद्रित अर्थव्यवस्था, ग्रामीण पुनर्निर्माण और स्थानीय स्वशासन को विशेष महत्व प्राप्त था। वे मानते थे कि केंद्रीकरण न केवल आर्थिक शोषण को बढ़ाता है, अपितु राजनीतिक स्वतंत्रता को भी संकुचित करता है (लोहिया, 1976; ठाकुर, 1979)। राजनीतिक विकेंद्रीकरण के संदर्भ में उन्होंने "चौखंभा राज्य" की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें गाँव, जनपद, प्रदेश एवं केंद्र, इन चार स्तंभों के बीच सत्ता का संतुलित वितरण किया जाना था। इस संकल्पना का उद्देश्य जनसामान्य को निर्णय-प्रक्रिया में प्रत्यक्ष भागीदार बनाना था, ताकि लोकतंत्र मात्र चुनावी प्रक्रिया तक सीमित न रहकर सहभागी स्वरूप ग्रहण कर सके।

4.5 लोकतांत्रिक समाजवाद की अवधारणा

लोहिया के समाजवाद की एक विशिष्टता यह थी कि उन्होंने समाजवाद और लोकतंत्र को परस्पर अविच्छिन्न माना (केल्कर, 1963)। वे अधिनायकवादी मार्ग से स्थापित समाजवाद को अस्वीकार करते थे और मानते थे कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नागरिक अधिकार एवं असहमति का सम्मान समाजवाद के अनिवार्य अंग हैं। इसीलिए उन्होंने सविनय अवज्ञा एवं सत्याग्रह जैसी अहिंसक प्रतिरोध की पद्धतियों को समाजवादी संघर्ष का वैध साधन माना (कुमारी एवं झा, 2019)। उनका लोकतांत्रिक समाजवाद नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित था, जिसमें साध्य और साधन दोनों की पवित्रता पर बल दिया गया। इस दृष्टि से लोहिया का चिंतन गांधीवादी आदर्शों और आधुनिक समाजवादी आकांक्षाओं का सेतु बनता है (प्रसाद, 1974; सिन्हा, 1965)।

5. समकालीन भारतीय राजनीति में लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता

5.1 सामाजिक न्याय की राजनीति

समकालीन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय एक केंद्रीय विमर्श बन चुका है, और इस विमर्श की वैचारिक आधारशिला लोहियावादी चिंतन में सहज ही खोजी जा सकती है (कुमारी, 2025)। आरक्षण, सामाजिक प्रतिनिधित्व और वंचित वर्गों के अधिकारों से संबंधित आज के अनेक राजनीतिक प्रश्न उस दिशा में बढ़ते दिखाई देते हैं जिसकी ओर लोहिया ने दशकों पूर्व संकेत किया था (निगम एवं मीना, 2022)। सामाजिक न्याय को राजनीतिक एजेंडे के केंद्र में लाने का जो प्रयास आज दिखाई देता है, वह लोहिया के "विशेष अवसर" के सिद्धांत का ही विस्तार प्रतीत होता है।

5.2 पिछड़े वर्गों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का प्रश्न

लोहिया ने जिस पिछड़े वर्ग के राजनीतिक नेतृत्व की कल्पना की थी, वह स्वतंत्रता-उपरांत भारत के राजनीतिक परिदृश्य में एक यथार्थ बनकर उभरा है। विशेषकर उत्तर भारत में पिछड़ी जातियों के नेतृत्व का उभार और उनके स्वतंत्र राजनीतिक संगठनों का गठन लोहियावादी विचारधारा की व्यावहारिक परिणति माना जा सकता है (कुमारी, 2025)। प्रतिनिधित्व के इस प्रश्न ने भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, यद्यपि यह प्रक्रिया अनेक अंतर्विरोधों से भी ग्रस्त रही है।

5.3 लोकतांत्रिक संस्थाओं एवं जनभागीदारी का महत्व

लोहिया द्वारा प्रतिपादित सहभागी लोकतंत्र एवं विकेंद्रित स्वशासन की संकल्पना आज की राजनीतिक परिस्थितियों में अत्यंत प्रासंगिक है। स्थानीय स्वशासन को सबल बनाने, निर्णय-प्रक्रिया में जनसामान्य की भागीदारी सुनिश्चित करने और लोकतांत्रिक संस्थाओं को जन-केंद्रित बनाने की आवश्यकता पर लोहिया का बल आज भी मार्गदर्शक है (केल्कर, 1963; ठाकुर, 1979)। जब लोकतंत्र मात्र चुनावी अनुष्ठान में सिमटने लगता है, तब लोहिया की चौखंभा राज्य की संकल्पना एक प्रासंगिक विकल्प प्रस्तुत करती है।

5.4 आर्थिक असमानता और विकास की राजनीति

लोहिया का विकेंद्रित आर्थिक विकास का माॅडल समकालीन विकास-विमर्श के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। बढ़ती आर्थिक असमानता, क्षेत्रीय विषमता और रोजगार के संकट के संदर्भ में उनका छोटी इकाइयों, श्रम-प्रधान तकनीक और ग्रामीण पुनर्निर्माण पर बल आज भी विचारणीय है (शर्मा, 1979; लोहिया, 1976)। आर्थिक विकास को मात्र समग्र वृद्धि-दर के बजाय सामाजिक न्याय एवं वितरणात्मक समानता से जोड़कर देखने की लोहियावादी दृष्टि आज की विकास-राजनीति के लिए एक आलोचनात्मक कसौटी प्रदान करती है।

5.5 वर्तमान राजनीतिक विमर्श में लोहियावादी दृष्टिकोण

समकालीन राजनीतिक विमर्श में लोहियावादी दृष्टिकोण विभिन्न रूपों में उपस्थित है, चाहे वह सामाजिक न्याय आधारित गठबंधनों के रूप में हो, क्षेत्रीय एवं भाषाई पहचानों की राजनीति के रूप में हो, अथवा वंचित वर्गों की राजनीतिक चेतना के रूप में (कुमारी, 2025; चतुर्वेदी, 2019)। लोहिया का यह आग्रह कि राजनीति को मात्र सत्ता-प्राप्ति का साधन न मानकर सामाजिक रूपांतरण का माध्यम बनाया जाए, आज के नैतिक रूप से क्षीण होते राजनीतिक परिदृश्य में और भी सार्थक प्रतीत होता है।

6. विश्लेषणात्मक चर्चा

6.1 लोहिया के विचारों और वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन

लोहिया के विचारों और वर्तमान भारतीय राजनीतिक यथार्थ के बीच तुलनात्मक अध्ययन से एक जटिल चित्र उभरता है। एक ओर उनके सामाजिक न्याय एवं पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व संबंधी विचार राजनीतिक यथार्थ बनकर साकार हुए हैं (कुमारी, 2025; निगम एवं मीना, 2022)। दूसरी ओर उनकी जाति-उन्मूलन की मूल आकांक्षा अधूरी रह गई है, क्योंकि व्यावहारिक राजनीति में जाति प्रायः उन्मूलन के बजाय सशक्तीकरण एवं संगठन का आधार बन गई है (लोहिया, 1985)। इस प्रकार लोहिया के आदर्श और उनके नाम पर संचालित राजनीतिक व्यवहार के बीच एक स्पष्ट अंतराल दिखाई देता है। इसी प्रकार उनका विकेंद्रित आर्थिक माॅडल केंद्रीकरण की वर्तमान प्रवृत्ति के समक्ष

व्यापक रूप से व्यवहार में नहीं आ पाया (शर्मा, 1979)। यह अंतराल इस बात की ओर संकेत करता है कि लोहियावादी राजनीति ने सामाजिक न्याय के आयाम को तो अपनाया, किंतु उसके आर्थिक एवं संस्थागत आयामों की उपेक्षा कर दी।

6.2 उनके विचारों की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

लोहिया के चिंतन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने भारतीय राजनीति में जाति एवं सामाजिक न्याय के प्रश्न को वैचारिक केंद्र में स्थापित किया तथा वंचित वर्गों को राजनीतिक चेतना प्रदान की (चतुर्वेदी, 2019; ठाकुर, 1979)। उन्होंने समाजवाद को भारतीय यथार्थ के अनुरूप मौलिक स्वरूप दिया और इसे लोकतांत्रिक मूल्यों से जोड़ा (केल्कर, 1963)। किंतु उनके चिंतन की कुछ सीमाएँ भी रहीं। उनके विचारों में कई बार सैद्धांतिक स्पष्टता की अपेक्षा भावनात्मक आवेग अधिक प्रबल रहा, जिससे एक सुसंगठित वैचारिक प्रणाली के निर्माण में कठिनाई हुई (सिन्हा, 1965; प्रसाद, 1974)। इसके अतिरिक्त उनकी राजनीति संगठनात्मक स्थायित्व प्राप्त नहीं कर सकी, जिसके कारण समाजवादी आंदोलन विभाजन एवं बिखराव का शिकार हुआ। उनके अनेक आदर्श व्यावहारिक राजनीतिक संदर्भ में पूर्णतः मूर्त नहीं हो सके।

6.3 वर्तमान समय में समाजवादी विचारधारा की भूमिका

वर्तमान वैश्वीकृत एवं बाजार-प्रधान युग में समाजवादी विचारधारा की भूमिका पुनर्परिभाषित होने की माँग करती है। लोहिया का यह आग्रह कि आर्थिक नीतियों को सामाजिक न्याय एवं समानता की कसौटी पर परखा जाए, बढ़ती असमानता के युग में और भी प्रासंगिक हो उठता है (रहमान, 2020; कुमारी, 2025)। समाजवादी विचारधारा आज एक ऐसी आलोचनात्मक दृष्टि के रूप में महत्वपूर्ण है जो विकास को मानवीय एवं न्यायसंगत बनाए रखने का आग्रह करती है। इस अर्थ में लोहियावाद एक समाप्तप्राय विचारधारा न होकर एक सतत प्रासंगिक वैचारिक संसाधन है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया का समाजवादी चिंतन भारतीय राजनीतिक विचार परंपरा की एक मौलिक एवं स्थायी देन है। उनका समाजवाद आर्थिक समानता, सामाजिक न्याय, जाति-उन्मूलन, विकेंद्रीकरण एवं लोकतांत्रिक मूल्यों का एक समन्वित ढाँचा प्रस्तुत करता है, जो भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप गढ़ा गया था। शोध के मुख्य निष्कर्ष यह हैं कि प्रथमतः, लोहिया के सामाजिक न्याय एवं पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व संबंधी विचार समकालीन भारतीय राजनीति में गहराई से प्रासंगिक हैं और अनेक स्तरों पर मूर्त भी हुए हैं (कुमारी, 2025; निगम एवं मीना, 2022)। द्वितीयतः, उनके जाति-उन्मूलन एवं विकेंद्रीकरण संबंधी आदर्श अधूरे रहे हैं और उनके नाम पर संचालित राजनीति प्रायः इन मूल आदर्शों से विचलित हुई है। तृतीयतः, लोहियावादी चिंतन आज भी एक आलोचनात्मक एवं नैतिक दृष्टि प्रदान करता है जो लोकतंत्र को जन-केंद्रित और विकास को न्यायसंगत बनाने का आग्रह करती है। समकालीन राजनीति के लिए लोहिया के विचारों का महत्व इस तथ्य में निहित है कि वे सत्ता-केंद्रित राजनीति के समक्ष मूल्य-केंद्रित राजनीति का विकल्प प्रस्तुत करते हैं। भविष्य के अध्ययन की दृष्टि से यह उपयोगी होगा कि लोहियावादी विचारधारा के व्यावहारिक प्रभावों का क्षेत्रीय एवं तुलनात्मक स्तर पर अनुभवजन्य अध्ययन किया जाए, तथा बदलते आर्थिक एवं तकनीकी परिवेश में उनके चिंतन की पुनर्व्याख्या की संभावनाओं को खोजा जाए। इस प्रकार लोहिया का चिंतन एक ऐतिहासिक धरोहर मात्र न होकर भारतीय लोकतंत्र के भविष्य के लिए एक जीवंत वैचारिक प्रेरणा बना हुआ है।

Reference

[1]. चतुर्वेदी, पी. के. (2019). डॉ. राममनोहर लोहिया के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का अध्ययन. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 16(4), 1417–1420.

[2]. गौतम, बलवान (संपादित) (2013). तुलनात्मक राजनीतिक सिद्धांत के संदर्भ. हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय—दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 217.

[3]. लोहिया, राममनोहर (1976). इतिहास चक्र. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 48.

[4]. दीक्षित, ताराचन्द (2013). डॉ. राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 49.

[5]. लोहिया, राममनोहर (1985). जाति प्रथा. नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 79.

[6]. निगम, एस., एवं मीना, पी. आर. (2022). डॉ. राममनोहर लोहिया के सामाजिक विचारों का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड एजुकेशन रिसर्च, 11(2), 209–214.

[7]. रहमान, एम. के. (2020). राममनोहर लोहिया का सामाजिक चिंतन. जुनी ख्यात, 10(7), 115–131.

[8]. कुमारी, कुमोदनी, एवं झा, किरण (2019). महात्मा गाँधी, जयप्रकाश नारायण एवं राममनोहर लोहिया के सामाजिक न्याय संबंधी विचारों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 6(2), 386–392.

[9]. कुमारी, म. (2025). राम मनोहर लोहिया के राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता: वर्तमान भारतीय सन्दर्भ में. ज्ञांशौर्यम, इंटरनेशनल साइंटिफिक रिफर्ड रिसर्च जर्नल, 8(4), 14–18. https://doi.org/10.32628/GISRRJ

[10]. केल्कर, इन्दूमति (1963). लोहिया: सिद्धान्त और कर्म. नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद.

[11]. प्रसाद, अखिलेन्द्र राय (1974). सोशलिस्ट थॉट इन मॉडर्न इण्डिया. मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ.

[12]. भसीन, प्रेम (1972). डॉ. लोहिया एण्ड एशियन सोशलिज्म. जनता, वाल्यूम 38–39, अक्टूबर 15, पृ. 9–12.

[13]. ठाकुर, कृष्ण नन्दन (1979). डॉ. राम मनोहर लोहिया के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विचार. एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली.

[14]. शर्मा, यतीन्द्र (1979). डॉ. लोहिया का अर्थ दर्शन. चित्रा प्रकाशन, कानपुर.

[15]. सिन्हा, एल. पी. (1965). द लेफ्टविंग इन इण्डिया. रुक्मणी सिन्हा फॉर दि न्यू पब्लिशर्स, मुजफ्फरपुर, बिहार.

Cite this Article:

डॉ वीरेंद्र कुमार, "राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों का समकालीन भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT), ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 5, pp. 45-50, May 2026.*

Journal URL: ***https://vijact.com***

DOI: https://doi.org/10.65785/vijact.v2i5.46